[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper :	**6975**	**IC**
Unique Paper Code	: 72052802	
Name of the Paper	: हिन्दी भाषा और संप्रेषण	
Name of the Course	: **Hindi : Ability Enhancement Compulsory Course**	
Semester	: II	
Duration : 3 Hours	Maximum Marks : 75	

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सम्प्रेषण का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके महत्व पर प्रकाश डालिए । (10)

अथवा

हिन्दी भाषा की संप्रेषणशीलता में कहावतों और मुहावरों के योगदान पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

2. संप्रेषण के मौखिक और लिखित रूपों के मूलभूत अन्तर पर प्रकाश डालिए । (10)

अथवा

संप्रेषण की बाधाओं और उनके समाधान का उल्लेख कीजिए।

3. संवाद का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए। (10)

अथवा

प्रभावी संप्रेषण की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

4. अनुवाद की परिभाषा देते हुए, अनुवाद के प्रकारों का उल्लेख कीजिए। (10)

अथवा

विश्लेषण व व्याख्या को परिभाषित करते हुए उनके अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित पर टिप्पणी कीजिए : (6+6+6)

(i) संप्रेषण के मॉडल **अथवा** संप्रेषण की प्रक्रिया।

(ii) सामाजिक संप्रेषण **अथवा** व्यवसायिक संप्रेषण।

(iii) वैयक्तिक संप्रेषण **अथवा** भ्रामक संप्रेषण।

6. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए : (6+6+5)

(i) अनुवादक के गुण **अथवा** संप्रेषण के माध्यम।

(ii) विश्लेषण **अथवा** अन्वय।

(iii) गहन अध्ययन **अथवा** अध्याहार।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper :	**8934**	**IC**
Unique Paper Code	: 12051201	
Name of the Paper	: Hindi Sahitya Ka Itihas (Aadikal Aur Madhyakal)	
Name of the Course	: **B.A. (H) Hindi – CBCS**	
Semester	: II	

Duration : 3 Hours   Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा का परिचय दीजिए। (14)

अथवा

हिन्दी साहित्य का काल-विभाजन किन-किन आधारों पर किया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

2. आदिकालीन साहित्य के राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य पर प्रकाश डालिए। (14)

अथवा

P.T.O.

आदिकालीन लौकिक काव्य की विशेषताएँ बताइए।

3. भक्तिकालीन सूफ़ी शाखा की प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए। (14)

अथवा

'भक्ति-काल हिंदी साहित्य का स्वर्ण-काल है', इस कथन की विवेचना कीजिए।

4. रीतिबद्ध एवं रीतिमुक्त काव्य का अंतर बताते हुए उनकी विशेषताएँ रेखांकित कीजिए। (14)

अथवा

रीतिकालीन साहित्य की युगीन पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

5. (क) किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : (6,6)

(i) रीतिकाल का नीतिकाव्य

(ii) निर्गुण काव्य धारा

(iii) नवधा भक्ति

(iv) रासो काव्य

(ख) किसी **एक** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : (7)

(i) कबीरदास

(ii) बिहारीलाल

(3000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 8884 **IC**

Unique Paper Code : 12051401

Name of the Paper : Bhartiya Kavyashastra (भारतीय काव्यशास्त्र)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (CBCS)**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. इस प्रश्न-पत्र के **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा का संक्षिप्त परिचय दीजिए ।

अथवा

भारतीय आचार्यों द्वारा निरूपित काव्य लक्षणों पर प्रकाश डालिए । (12)

2. रस के भेद बताते हुए शृंगार रस का विवेचन कीजिए ।

अथवा

P.T.O.

लक्षणा शब्द-णक्ति की परिभाषा देते हुए उसके विविध भेदों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए । (12)

3. मुक्तक काव्य **अथवा** खण्ड काव्य का स्वरूप स्पष्ट कीजिए । (12)

4. (क) किन्हीं **तीन** अलंकारों के लक्षण उदाहरण लिखिए -

अनुप्रास, अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा, श्लेष, वक्रोक्ति, रूपक

(3×3=9)

(ख) किन्हीं **तीन** छंदों के लक्षण-उदाहरण लिखिए -

दोहा, हरिगीतिका, शिखरिणी, चौपाई, द्रुतविलम्बित, कुंडलिया

(3×3=9)

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए - (7×3=21)

(क) काव्य-हेतु

(ख) काव्य-प्रयोजन

(ग) माधुर्य गुण

(घ) अभिधा शब्द शक्ति

(ङ) विभावना और विशेषोक्ति में अंतर ।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 8644 **IC**

Unique Paper Code : 12053407

Name of the Paper : भाषा और समाज (Bhasha Aur Samaj)

Name of the Course : **B.A. (H) HINDI – CBCS SEC**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. भाषा और समाज का अंतर्संबंध स्पष्ट कीजिए।

अथवा

समाज भाषाविज्ञान का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। (15)

2. भाषा और जातीयता की समाज में क्या भूमिका है – विश्लेषित कीजिए।

अथवा

P.T.O.

भारत के संदर्भ में बहुभाषिकता की स्थिति स्पष्ट कीजिए। (15)

3. जेंडर भाषा-अस्मिता को कैसे प्रभावित करता है ? स्त्री वर्ग और पुरुष वर्ग की भाषा के अन्तर को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

भाषा और संस्कृति के अन्तःसंबंध का विश्लेषण कीजिए। (15)

4. भाषा सर्वेक्षण के विभिन्न नमूनों पर विचार कीजिए।

अथवा

भाषा-सर्वेक्षण के स्वरूप की विवेचना कीजिए। (15)

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए :

(क) भाषा और वर्ग

(ख) भाषा का समाजशास्त्र

(ग) पिजिन व क्रियोल

(घ) एस. एम. एस. की भाषा (8,7)

[This question paper contains 6 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 9096 **IC**

Unique Paper Code : 12051402

Name of the Paper : हिंदी कविता (छायावाद के बाद)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (15)

(क) अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रोबीला चेहरा

आहिस्ते से बोलारू हाँ सा'ब

लाख कहता हूँ नहीं मानती मुनिया

टाँगे हुए है कई दिनों से

P.T.O.

अपनी अमानत

यहाँ अब्बा की नजरों के सामने

मैं भी सोचता हूँ

क्या बिगाड़ती हैं चूड़ियाँ

किस जुर्म पे हटा दूँ इनको यहाँ से?

अथवा

जैसे कोई बिजली कौंध जाए

एक दबी हुई स्मृति

झकझोर जाती है मुझे

और मुझे लगता है कहीं मेरे भीतर भी है

एक पागल स्त्री

जो दरवाजों को पीटती

और दीवारों को खुरचती हुई

उसी तरह लगा रही है चक्कर

मेरे उपमहाद्वीप के विशाल नक्शे में

न जाने कब से।

(ख) हाड़-माँस की गठरी-सा जीवन

जीवित जैसे नंगी डाल है,

खड़-खड़ कर उड़ते खग से पत्ते

फैला भू-पर झिलमिल जाल है,

आँखों का स्वप्न मिटा जा रहा है

पुरवैया धीरे बहो।

अथवा

लेकिन इससे भी हैरतअंगेज है चोरी की एक घटना

जो सम्पूर्ण क्षेत्र में आज भी चर्चा का विषय है-

कहते हैं एक चोर सेंध मार घर में घुसा

इधर-उधर टो-टा किया और जब कुछ न मिला

तब चुहानी में रक्खा बासी भात और साग खा

थाल वहीं छोड़ भाग गया-

वो तो पकड़ा ही जाता यदि दबा न ली होती डकार।

2. निम्नलिखित अवतरणों में से **किन्हीं दो** का रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए। (15)

(क) जिनकी सेवाएँ अतुलनीय
पर विज्ञापन से रहे दूर
प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके
कर दिए मनोरथ चूर-चूर!
उनको प्रणाम!

(मूल संवेदना)

(ख) राष्ट्रगीत में भला कौन वह
भारत-भाग्य-विधाता है
फटा सुथन्ना पहने जिसका
गुन हरचरना गाता है।

(व्यंग्यात्मकता)

(ग) इन नये बसते इलाकों में
जहाँ रोज बन रहे हैं नये-नये मकान
मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ

धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर
जमीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बायें
मुड़ना था मुझे ।

(भाव-सौन्दर्य)

3. अज्ञेय की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

'धूमिल की कविता सामान्य जन की पीड़ा को अभिव्यक्ति देती है', इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

4. 'अकाल और उसके बाद' कविता की मूल संवेदना का विवेचन कीजिए । (15)

अथवा

नवगीत-परम्परा में शंभुनाथ सिंह का योगदान स्पष्ट कीजिए ।

5. 'अपनी केवल धार' कविता की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

पाठ्यक्रम में निर्धारित कविताओं के आधार पर केदारनाथ सिंह की काव्य-कला का विवेचन कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 9139 **IC**

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : Hindi Paper-X (Hindi Upanyas)

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi (CBCS)**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए : (7.5×2=15)

(क) औरत की ज़िन्दगी और है ही किसलिए बहनजी! वह अपने दिल से लाचार है, जिससे वफा की उम्मीद करती है, वही दग़ा करता है। उसका क्या अख्तियार ? लेकिन बेवफाओं से मुहब्बत न हो, तो मुहब्बत में मजा ही क्या रहे। शिकवा-शिकायत, रोना-धोना, बेताबी और बेकरारी यही तो मुहब्बत के मज़े हैं, फिर मैं तो वफा की उम्मीद भी नहीं करती थी।

P.T.O.

अथवा

"जो अपने से चाहता हूँ। अपने से चाहता हूँ कि निकल चलूँ। इस फैले विश्व में भयभीत को ढाढ़स दूँ। भूखे के लिए अन्न की व्यवस्था करूँ, दम्भी का दम्भ तोड़ूँ संकीर्ण स्वार्थों की दीवारें जो समाज में खड़ी हैं उन्हें ढहा न दूँ तो उनमे द्वार-खिड़कियाँ तो खोल दूँ। तुमसे चाहता हूँ कि जब तक तुम आर्त्त की पुकार सुन सकती हो, तब उस पुकार की तरफ बढ़ भी चलो।"

(ख) "मूर्ख, तूने और तेरे स्वामी ने परलोक देखा है। यह विश्वास ही तेरी दासता है। तू अपने पर स्वामी के अधिकार को स्वीकार करता है, यह तेरी दासता का बंधन है। तू संकट से पलायन कर रक्षा चाहता है, यह तेरी निर्बलता है। संकट सब स्थान और समय में तेरे साथ रहेगा। संकट का पराभाव कर। पराभूत होना ही पाप है। उसका फल तू तत्काल भोगेगा। तू स्वतंत्र 'कर्त्ता' है।"

अथवा

"और इस स्थिति की दो ही परिणतियाँ हो सकती हैं... होंगी। या तो तुम उसके स्वतंत्र अस्तित्व को समाप्त करके उस पर हावी होने की कोशिश करोगी और या फिर अपने को बहुत ही

उपेक्षित और अपमानित महसूस करोगी। उस समय तुम्हें यही लगेगा कि जिसके पीछे तुमने अपनी सारी ज़िंदगी बरबाद की, वह अब तुम्हें ही भूलकर अपनी जिंदगी जीने की बात सोच रहा है।"

2. 'कर्मभूमि' उपन्यास में तत्कालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया गया है। इस कथन की विवेचना कीजिए।

अथवा

'कर्मभूमि' उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए। (15)

3. ''आपका बंटी' उपन्यास में समाज के वर्तमान जीवन की समस्याओं का उद्घाटन हुआ है', स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'आपका बंटी' उपन्यास नारी मन की अनेक पर्तों को खोलता है। स्पष्ट कीजिए। (15)

4. 'सुनीता' स्त्रीप्रधान उपन्यास है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"'दिव्या' इतिहास की नई संभावनाओं को संकेत देने वाला उपन्यास है" इस कथन की विवेचन कीजिए। (15)

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (7.5×2=15)

(क) 'दिव्या' उपन्यास की मूल संवेदना ;

(ख) 'आपका बंटी' का कथ्य ;

(ग) 'कर्मभूमि' उपन्यास में नारी-जागृति का स्वर ;

(घ) 'सुनीता' उपन्यास में हरिप्रसन्न का चरित्र-चित्रण ।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 9229 **IC**

Unique Paper Code : 62053408

Name of the Paper : विज्ञापन और हिंदी भाषा

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi / CBCS – SEC**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. विज्ञापन के स्वरूप एवं अवधारणा को स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

विज्ञापन के विभिन्न प्रकारों को संक्षेप में लिखिए । (12)

2. विज्ञापन के विविध माध्यमों का उदाहरण सहित परिचय दीजिए ।

अथवा

P.T.O.

प्रिंट एवं रेडियो के लिए कॉपी लेखन के महत्व को स्पष्ट कीजिए। (12)

3. विज्ञापन की भाषा के विभिन्न पक्षों को समझाइए।

अथवा

हिंदी विज्ञापनों की भाषा के स्वरूप पर विचार कीजिए। (12)

4. रेडियो जिंगल लेखन की प्रकृति एवं लोकप्रियता को संक्षेप में लिखिए।

अथवा

प्रिंट माध्यम के लिए विज्ञापनों के निर्माण पर प्रकाश डालिए। (12)

5. किन्हीं **तीन** विषयों पर टिप्पणी लिखिए :- (9×3=27)

(i) विज्ञापनों का महत्व

(ii) मार्केटिंग और ब्रांड-निर्माण

(iii) विज्ञापन के नए संदर्भ

(iv) टेलीविजन के लिए कॉपी लेखन

(v) माध्यम चयन का औचित्य

(vi) सजावटी विज्ञापन

Room No 11

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 9000 **IC**

Unique Paper Code : 12057611

Name of the Paper : अवधारणात्मक साहित्यिक पद

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS – DSE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य है ।

1. लक्षणा और व्यंजना में अंतर स्पष्ट करते हुए लक्षणा के भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । (12)

अथवा

उपमा अलंकार और उसके भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

2. महाकाव्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए । (12)

अथवा

काव्य-हेतु के विभिन्न अवयवों पर प्रकाश डालिए।

3. जादुई यथार्थवाद की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए यथार्थवाद से उसकी भिन्नता रेखांकित कीजिए। (12)

अथवा

शास्त्रवाद की मुख्य साहित्यिक स्थापनाओं पर विचार कीजिए।

4. आधुनिकता का आशय बताते हुए आधुनिकता और आधुनिकतावाद में अंतर स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

उपन्यास के स्वरूप और उसके तत्त्वों का विवेचन कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (9×3=27)

(क) काव्य-लक्षण ;

(ख) खंडकाव्य ;

(ग) मानववाद ;

(घ) प्रतीक ;

(ङ) छंद ;

(च) उत्तर-आधुनिकता।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 9175 **IC**

Unique Paper Code : 62053610

Name of the Paper : भाषायी दक्षता

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – CBCS (SEC)**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. भाषायी दक्षता का महत्व स्पष्ट करते हुए पठन और लेखन कौशल का संक्षेप में परिचय दीजिए । (15)

अथवा

भाषायी दक्षता की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए ।

2. भाषा-व्यवहार से क्या अभिप्राय है ? इसकी विभिन्न शैलियों का वर्णन कीजिए । (15)

अथवा

P.T.O.

भाषिक क्षमता में शिक्षा एवं वर्ग के महत्व का विवेचन कीजिए।

3. स्वाध्याय और उद्देश्य-केन्द्रित पठन से आप क्या समझते हैं? रचनात्मक लेखन में इनकी भूमिका पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

प्रभावी श्रवण के विभिन्न आयामों को स्पष्ट कीजिए।

4. 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' का पल्लवन कीजिए। (15)

अथवा

'बदलती शिक्षा-नीति' पर एक समूह चर्चा लिखिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए :- (5,5,5)

(क) भाषिक प्रयोग

(ख) वार्तालाप और एकालाप

(ग) सामान्य और तकनीकी शब्द

(घ) श्रवण

(ङ) भाषायी दक्षता के आयाम

(च) फिल्म-समीक्षा

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper :	**8719**	**IC**
Unique Paper Code	: 12051601	
Name of the Paper	: हिंदी आलोचना	
Name of the Course	: **B.A. (H) HINDI – CBCS**	
Semester	: VI	

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के सन्दर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए – (10×3=30)

(क) भावों के छानबीन करने पर मंगल का विधान करने वाले दो भाव ठहरते हैं – करुणा और प्रेम । करुणा की गति रक्षा की ओर होती है और प्रेम की रंजन ओर । लोक में प्रथम साध्य रहा है । रंजन का अवसर उनके पीछे आता है । अत: साधनावस्था या प्रयत्नपक्ष को लेकर चलने वाले काव्यों का बीजभाव करुणा ही ठहरती है । इसी से शायद अपने दो नाटकों में रामचरित को लेकर चलने वाले महाकवि भवभूति ने 'करुण' को ही एकमात्र रस कह दिया ।

P.T.O.

अथवा

जो हो, जब तक साहित्य का काम केवल मनबहलाव का सामान जुटाना, केवल लोरियाँ गा-गाकर सुलाना, केवल आँसू बहाकर जी हल्का करना था, तब तक उसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी। वह एक दीवाना था जिसके गम दूसरे खाते थे। मगर हम साहित्य को केवल मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सचाइयों का प्रकाश हो- जो हममें गति और बेचैनी पैदा करे सुलाए नहीं; क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।

(ख) कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुंदरी के बाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी, तब हिंदी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया। रीतिकालीन प्रचलित परंपरा से - जिसमें बाह्य वर्णन की प्रधानता थी - इस ढंग की कविताओं में भिन्न प्रकार के भावों की नए ढंग से अभिव्यक्ति हुई। ये नवीन भाव आंतरिक स्पर्श से पुलकित थे।

अथवा

आज नाना स्वरों में वैचित्र्य-संवलित आकार धारण करके एक ही उत्तर मानवचित्त की गंभीरतम भूमिका से निकल रहा है; मानववाद ठीक है, पर मुक्ति किसकी ? क्या व्यक्ति-मानव

की ? नहीं, सामाजिक मानववाद ही उत्तम समाधान है। मनुष्य को, व्यक्ति-मनुष्य को नहीं, बल्कि समष्टि मनुष्य को, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक शोषण से मुक्त करना होगा - "नान्य: पन्था विद्यते अयनाय।"

(ग) यह कहा जा सकता है कि हमारे मूल राग-विराग नहीं बदले- प्रेम अब भी प्रेम है और घृणा अब भी घृणा, यह साधारणतया स्वीकार किया जा सकता है। पर यह भी ध्यान में रखना होगा कि राग वही रहने पर भी रागात्मक संबंधों की प्रणालियाँ बदल गयी हैं; और कवि का क्षेत्र रागात्मक सम्बन्धों का क्षेत्र होने के कारण इस परिवर्तन का कवि कर्म पर बहुत गहरा असर पड़ा है। निरे 'तथ्य' और 'सत्य' में- या कह लीजिए 'वस्तु-सत्य' और 'व्यक्ति-सत्य'-में यह भेद है कि 'सत्य' वह 'तथ्य' है जिस के साथ हमारा रागात्मक संबंध हैय बिना इस संबंध के वह एक बाह्य वास्तविकता है जो तद्वत काव्य में स्थान नहीं पा सकती। लेकिन जैसे-जैसे बाह्य वास्तविकता बदलती है- वैसे-वैसे हमारे उस से रागात्मक संबंध जोड़ने की प्रणालियां भी बदलती हैं- और अगर नहीं बदलतीं तो उस बाह्य वास्तविकता से हमारा संबंध टूट जाता है।

अथवा

सच बात तो यह है कि आज के कवि को एक साथ तीन क्षेत्रों में संघर्ष करना है। उसके संघर्ष का त्रिविध स्वरूप यह है या होना चाहिए: (1) तत्व के लिए संघर्ष; (2) अभिव्यक्ति को

P.T.O.

सक्षम बनाने के लिए संघर्ष; (3) दृष्टि-विकास का संघर्ष। प्रथम का संबंध मानव-वास्तविकता के अधिकाधिक सक्षम उद्घाटन-अवलोकन से है। दूसरे का संबंध चित्रण-सामर्थ्य से है। और तीसरे का संबंध थियरी से है, विश्व-दृष्टि के विकास से है, वास्तविकताओं की व्याख्या से है। यह त्रिविध संघर्ष है।

2. रामचंद्र शुक्ल से पूर्व की हिंदी आलोचना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'साहित्य का उद्देश्य' पाठ के आधार पर प्रेमचंद की साहित्य-दृष्टि पर विचार कीजिए।

3. 'आधुनिक साहित्य: नई मान्यताएँ' पाठ के आधार पर हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचनात्मक मान्यताओं को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'मेरी साहित्यिक मान्यताएँ' पाठ के आलोक में डॉ. नगेन्द्र की आलोचना दृष्टि पर विचार कीजिए।

4. 'तुलसी साहित्य के सामंतविरोधी मूल्य' पाठ के आधार पर रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'नई कविता का आत्मसंघर्ष' पाठ के आधार पर मुक्तिबोध की काव्य-दृष्टि स्पष्ट कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper :	**8784** **IC**
Unique Paper Code	: 12057608
Name of the Paper	: हिंदी की भाषिक विविधताएँ
Name of the Course	: **B.A. (H) Hindi – CBCS – DSE**
Semester	: VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

__छात्रों के लिए निर्देश__

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. वाचिक हिंदी के क्षेत्रीय रूपों का वर्णन कीजिए । (15)

अथवा

साहित्यिक भाषा के रूप में हिंदी की विविधता पर प्रकाश डालिए ।

2. निर्धारित पदों के आधार पर कबीर की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए । (15)

अथवा

P.T.O.

अमीर खुसरो की मुकरियों का प्रतिपाद्य लिखिए।

3. बनारसीदास रचित अर्धकथानक' आत्मकथा की कसौटी पर खरी उतरती है - स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

गालिब की शायरी तत्कालीन समाज का जीवंत दस्तावेज है - विवेचन कीजिए।

4. 'रानी केतकी की कहानी' के कथानक की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

फणीश्वरनाथ रेणु की 'पंचलैट' कहानी की शिल्पगत विशेषताएँ बताइए।

5. निम्नलिखित उद्धरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (8)

(क) मेरे दिल कूँ किया बेखुद तेरी अंखियों ने आखरि कूँ,
कि ज्यूँ बेहोश करती है शराब आहिस्ता-आहिस्ता
हुआ तुझ इश्क सूँ ए आतिशीं रू दिल मिरा पानी,
कि ज्यूँ गलता है आतिश सूँ गुलाब आहिस्ता-आहिस्ता

अथवा

वक्त बेवक्त मोहे वाकी आस,

रात दिन वह रहत मेरे पास,

मेरे मन को करत सब काम,

ए सखी साजन ना सखि राम

(ख) जोरहिं अजितनाथ के छंद। लिखहिं नाममाला भरि बंद ।।

च्यारौं काज करहिं मन लाइ। अपनी अपनी बिरिया पाइ ।।

इहि बिधि च्यारि महीनें गए। च्यारि काज संपूरन भए ।।

करी नाममाला सै दोइ। राखे अजित छंद उरपोइ ।। (7)

अथवा

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलनेवालों में से एक कोई बड़े पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े घाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक

भौं चढ़ाकर, आँखे फिराकर लगे कहने- यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छों से अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 8911 **IC**

Unique Paper Code : 12051602

Name of the Paper : Hindi Nibandh Aur Anya Gadya Vidhaein
हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए - (8+7=15)

(क) अभिषेक की बात चली, मन में अभिषेक हो गया और मन में राम के साथ राम का मुकुट प्रतिष्ठित हो गया । मन में प्रतिष्ठित हुआ, इसलिए राम ने राजकीय वेश उतारा, राजकीय रथ से उतरे, राजकीय भोग का परिहार किया, पर मुकुट तो लोगों के मन में था, कौसल्या के मातृ-स्नेह में था, वह कैसे उतरता, वह मस्तक पर विराजमान रहा और राम भीगें तो भीगें मुकुट न भीगने

पाये, इसकी चिंता बनी रही। राजा राम के साथ उनके अंगरक्षक लक्ष्मण का कमर-बंद दुपट्टा भी (प्रहरी की जागरुकता का उपलक्षण) न भीगने पाये और अखंड सौभाग्यवती सीता की मांग का सिंदूर न भीगने पाये, सीता भले ही भीग जाये।

अथवा

लोभियों का दमन योगियों के दमन से किसी प्रकार कम नहीं होता। लोभ के बल से वे काम और क्रोध को जीतते हैं, सुख की वासना का त्याग करते हैं, मान-अपमान में समान भाव रखते हैं। अब और चाहिए क्या ? जिससे वे कुछ पाने की आशा रखते हैं वह यदि उन्हें दस गालियाँ भी देता है तो उनकी आकृति पर न रोष का कोई चिह्न प्रकट होता है और न मन में ग्लानि होती है। न उन्हें मक्खी चूसने से घृणा होती है और न रक्त चूसने में दया। सुन्दर-से-सुन्दर रूप देखकर वे अपनी एक कौड़ी भी नहीं भूलते।

(ख) जिस बृहत्तर भारत के लिए हरेक भारतीय को उचित अभिमान है, क्या उसका निर्माण इन्हीं घुमक्कड़ी की चरण-धूलि ने नहीं किया? केवल बुद्ध ने ही अपनी घुमक्कड़ी से प्रेरणा नहीं दी, बल्कि घुमक्कड़ों का इतना जोर बुद्ध से एक दो शताब्दियों पूर्व ही था, जिसके ही कारण बुद्ध जैसे घुमक्कड़-राज इस देश में पैदा हो सके। उस वक्त पुरुष ही नहीं, स्त्रियाँ तक जम्बूस-वृक्ष

की शाखा ले अपनी प्रखर प्रतिभा का जौहर दिखाती, बाद में कूपमंडूकों को पराजित करती सारे भारत में मुक्त होकर विचरा करतीं थीं।

अथवा

शूद्र द्विज (या ब्राह्मण) का पूर्व-रूप है, वैसे ही जैसे मूर्ति का पूर्व-रूप अनगढ़ पत्थर। और मैं अपनी अनगढ़ता को गर्व से देखता हूँ, इसलिए कि जब तक अनगढ़ हूँ तभी तक विश्वविराट की मूर्तियों की सम्भावनाएँ मुझमें सुरक्षित हैं। गढ़ा गया नहीं कि एकरूपता, जड़ता गले पड़ी। श्रीकृष्ण की मूर्ति का पत्थर श्रीकृष्ण ही की मूर्ति भावना का प्रतीक रह जाता है। उसे राधा बनाना असंभव है।

2. 'जुबान' निबंध में लेखक ने जुबान की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है, स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'आचरण की सभ्यता' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

3. 'कुटज' निबंध की तात्विक विवेचना कीजिए।

अथवा

'रस आखेटक' निबंध की मूल संवेदना लिखिए। (15)

4. 'निराला की साहित्य साधना' पाठ के आधार पर निराला के जीवन संघर्षों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

आत्मकता के तत्त्वों के आधार पर 'अपनी खबर' की समीक्षा कीजिए। (15)

5. रेखाचित्र के तत्त्वों के आधार पर 'सुभान खाँ' पाठ का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

'अज्ञेय के साथ' पाठ के आधार पर अज्ञेय की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (15)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 8783 **IC**

Unique Paper Code : 12057607

Name of the Paper : Lok Natya लोकनाट्य (HDSE-A)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS – DSE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) अँगना आनंद लागत, दुअरा बधाव बाजत,

जाये के बिदेस रउआ कबहूँ मत भाखिये ।

धोती आ कमीज, टोपी आसकीटसिलाइ देहब,

इतर के बास तेल भूतनाथ माखिये ।

बिबिध मिठाई, पकवान, तरकारी, दधी, निमिकी,

P.T.O.

मोराबा, पापड़, घरहीं सब चाखिये ।
कहत 'भिखारी' पिया हिया में छमा करिके
हम से गरीबनी पर दया नित राखिये ।

अथवा

पिया मोर, मति जाहो पुरुबवा ।
पुरुब देस में टोना बेसी बा, पानी बहुत कमजोर । पिया मोर...
सुनत बानी आँख पानी देतबा, सारी भइल सर बोर । पिया मोर...
एक नाथ बिनु मन अनाथ रही, घुसी महल में चोर । पिया मोर...
कहतश भिखारीश हमारी ओर देख, कतिना करहीं निहोर ? पिया मोर...

(ख) वेद रीति और हवन कुण्ड एक श्रेष्ठ सा घर चाहिए सै ।
इंद्रजीत पराक्रमी पति मेरे को वर चाहिए सै ।। टेक ।।
माता पिता की सेवा करके चरणा मैं सिर धरता हो ।
समदम उपरम सात धाम कुछ संयम यज्ञ भी करता हो ।
अग्नि होत्र पंच महायज्ञ ओ्म का नाम सूमरता हो ।
तीन काल संध्या तर्पण मैं मन इधर-उधर ना फिरता हो ।
ण्ष्ण जैसा योगी हो, ना तै अर्जुन सा वर चाहिए ।।

अथवा

सत्पुरुषों का विश्वास चित्त अंदर धर्या करै।
सबसे प्रीत रखते हुए सब पर दया कर्या करै।
मनोरथ पूरा हो जाने पर संग से ना टर्या करै।
आत्मा अपणी पै छिड़वा ज्ञान की लगाओ चास।
प्रीत से विश्वास होता धर्म से निभाओ खास।
कहै लखमीचंद कदे सुणी ना जिसी आज तनै बात बताई।।

(ग) सांचो सत जंगल का जीव में, देख्यो हे म्हने देख्यो हे।।
सत को सांचो पड़छो देख्यो, यो मन म्हारो बेक्यो हे
जेसे पाप की पड़ती छत में, सत को थांबो टेंक्यो हे।
सत को सांच देखी ने भरम मन, को हेड़ीने फेंक्यो हे
सत की संगत से मन जाग्यो, मोह को बंदन छेक्यो हे।
गिद्ध पे सत्ती हुइ हे गीरदणी, आग में तन सब सेंक्यो हे।

अथवा

सांची तो संगत सादु की सुण जाजो रे
तम टेड़ी-मेड़ी दुनिया की चाल में मत आजो रे।।
धर जोगी को बेस फिरो तो गम खाजो रे
तम छोटी बात पे क्रोध कदी भी मत लाजो रे... सांची तो...।।
सादु संगत बेठ पारस बण जाजो रे
हे अलख नाम सुखधाम मुद्री पाजो रे... सांची तो...।।

P.T.O.

हरि किरतन उपदेस राम धुन गाजो रे

ग्यानी जन के ग्यान ध्यान समजाजो रे... सांची तो...।।

(10×3=30)

2. लोकनाट्य परंपरा पर विचार करते हुए 'रामलीला'की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'ख्याल' का स्वरूप स्पष्ट करते हुए इनकी परंपरा पर प्रकाश डालिए। (15)

3. 'सुल्ताना डाकू' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

अथवा

'सुल्ताना डाकू' नौटंकी के कथानक की समीक्षा कीजिए। (10)

4. 'भिखारी ठाकुर का मन संयोग शृंगार की अपेक्षा वियोग शृंगार में अधिक रमा है' – 'बिदेसिया' के आधार पर सिद्ध कीजिए।

अथवा

बिदेसिया के नाट्य शिल्प की समीक्षा कीजिए। (10)

5. 'सत्यवान-सावित्री' सांग में सावित्री और यमराज के मध्य हुए वार्तालाप का वर्णन कीजिए।

अथवा

'राजयोगी भरथरी' माच की मूल संवेदना लिखिए। (10)

(1200)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 8999 **IC**

Unique Paper Code : 12057610

Name of the Paper : शोध प्रविधि

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS – DSE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. शोध का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी प्रमुख विशेषताएँ लिखिए । (15)

अथवा

शोध-प्रविधि का प्रयोग शोध को वैज्ञानिक बनाता है, इस मान्यता पर विचार करते हुए शोध प्रविधि की आवश्यकता पर विचार कीजिए ।

2. शोध के प्रमुख प्रकारों का उल्लेख करते हुए किन्हीं दो प्रकारों का विस्तार से विवेचन कीजिए । (15)

अथवा

'साहित्यिक शोध, वैज्ञानिक शोध से भिन्न दृष्टि की माँग करती है', इस कथन पर विचार करते हुए साहित्यिक शोध की विशेषताएँ लिखिए ।

3. 'शोध करते समय तथ्य और विश्लेषण दोनों का ही समान महत्त्व होता है'- इस कथन की विवेचना कीजिए । (15)

अथवा

शोध के सन्दर्भ में निष्कर्ष एवं उपसंहार की भूमिका पर प्रकाश डालिए ।

4. एक अच्छे शोधार्थी में किन गुणों की अपेक्षा होती है ? विस्तार से लिखिए । (15)

अथवा

शोध के सन्दर्भ में आने वाली प्रमुख समस्याओं पर विस्तृत लेख लिखिए ।

5. टिप्पणी - कोई **दो** टिप्पणी लिखिए :

(क) विषय-चयन

(ख) हिन्दी में शोध की दशा

(ग) सामग्री-संकलन का महत्त्व

(घ) सन्दर्भ ग्रन्थ लिखने की एम. एल. ए. पद्धति

(ङ) तुलनात्मक शोध (8,7)